पाठ 11. हिमालय की याद में

पाठ का उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ पर्वतारोही बछेंद्री पाल की हिमालय यात्रा से जुड़े अनुभव तथा हिमालय के प्रति बचपन से उनका लगाव प्रदर्शित कर रहा है। इस पाठ का उद्देश्य बच्चों को बछेंद्री पाल के बारे में बताना तथा हिमालय की खूबसूरती से परिचित करवाना है।

पाठ का सारांश

हिमालय के बारे में जितना लिखा जाए उतना कम है। बछेंद्री पाल ने बताया कि हिमालय हमें अपनी ओर आकर्षित करता है। वे बारह वर्ष की आयु में पहली बार पिकनिक मनाने के लिए सहपाठियों के साथ हिमालय की लगभग 4000 मीटर ऊँची चोटी पर चढ़ी थीं। हिमालय के प्रति यह अनुराग जुनून में बदला और 23 मई, 1984 को एवरेस्ट पर चढ़ने में उन्होंने सफलता पाई। उन्होंने बताया है कि हिमालय एक जादुई संसार-सा लगता है। वहाँ अलग-अलग मौसम में जाने का अपना अलग रोमांच है। हिमालय पर लगभग चौदह हज़ार किस्मों के फूल और जड़ी-बूटियाँ हैं। ब्रह्मपुत्र, गंगा, यमुना कैसे बर्फ़ से नदियों का रूप ले लेती हैं यह देखकर मन प्रफुल्लित हो जाता है। वहाँ पर कोई यति नहीं है, ये मनगढ़ंत बातें हैं। हिमालय पर चढ़ाई करते समय पानी अधिक पीना चाहिए। तो आप भी कर आइए हिमालय दर्शन!

अध्यापन संकेत

पाठ वाचन से पूर्व बच्चों को बछेंद्री पाल के बारे में बताएँ। पाठ का आदर्श वाचन करें। बच्चों से एक-एक अंश पढ़वाएँ। बच्चों से पूछें तथा समझाएँ–

- ❖ यदि आपके काम में कोई मुश्किल आ रही हो तो आप क्या करोगे– मुश्किल का सामना करते हुए काम पूरा करोगे या घबराकर काम को बीच में ही छोड़ दोगे?
- ❖ हिमालय के सौंदर्य तथा महत्त्व के बारे में बताएँ।
- ❖ समझाएँ कि कोई भी काम दृढ़ इच्छाशक्ति के बल पर पूरा किया जा सकता है।

डिजिटल (Digital) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।